शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

गढ़मुक्तेश्वर के मूढ़ा उधोग में कार्यरत कारीगरों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 03.06.2023
स्वीकृतः 24.06.2023

35

प्रो० अर्चना गुप्ता
अर्थशास्त्र विभाग
एस० एस० वी० कॉलिज हापुड़

अनुज कुमार
शोधार्थी, यू०जी०सी०
ईमेलः *kumaranuj543210@gmail.com*

"जब तक हम ग्राम्य जीवन को पुरातन हस्तशिल्प के संबंध में पुनः जाग्रत नही करते, हम गांवों का विकास व पुनः निर्माण नही कर सकेगे"

– महात्मा गांधी

सारांश

भारत के प्रत्येक राज्य की हस्तकलाएं वहां की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को सजोए हुए है। जहां कारीगर अपने कला–कौशल से साधारण प्राकृतिक वस्तुओं जैसे लकड़ी, धातु, बॉस, बेत, पत्थर, घास–फूंस आदि से खिलौने, चटाई, बेत, टोकरा, कढ़ाई–बुनाई, ताम–चीनी, शतरंज सेटं, लाफिंग बुद्धा व मूढ़ा आदि कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करते है। ऐसे ही गढ़ गंगा का मूढ़ा उधोग भी भारतीय विरासत की एक अनुपम झलक है। सन से बनी रस्सी व सरकंडा (सेटों) के प्रयोग से बने भिन्न–भिन्न आकृतियों के मूढ़ों ने भी गढ़ गंगा को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान दिलाई है। इतनी कार्य कुशलता, सृजनता के बावजूद गढ़ गंगा के मूढ़ा कारीगरों की आर्थिक स्थिति अभी भी निम्न है। हमें अपने इस लधु शोध पत्र में मूढ़ा कारीगरों के समक्ष आने वाली समस्याओं जैसे निम्न आय, कच्चे माल को प्राप्त करने में जोखिम, विपणन की समस्या, सरकारी सुविधाओं का अभाव आदि समस्याओं का अध्ययन किया है।

मुख्य शब्द

हस्तशिल्प, सांस्कृतिक, कलात्मक, विपणन, जोखिम, सृजनता, सहभागिता, गढ़ मुक्तेश्वर, खादर, सरकंड़ा, मूढ़ा, बिहड।

शोध के उददेश्य

- हमारे इस लधु शोध का उददेश्य मूढ़ा उधोग में कार्यरत कारीगरों की आय, व्यय तथा बचत व्यवहार का अवलोकन करना है।
- मूढ़ा उधोग में कार्यरत कारीगरों के जीवन स्तर का अनुमान लगाना है।
- मूढ़ा उधोग में संलग्न महिला कारीगरों की सहभागिता दर का आकलन करना है।
- मूढ़ा उधोग के समक्ष आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना है।

- मूढ़ा उधोग में संलग्न कारीगरों को सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ प्राप्त होता है या नहीं, ज्ञात करना है।

शोध पद्वति

यह लघु शोध मुख्यतः प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है। जो गढ़ गंगा हापुड़ में निवासित मूढ़ा कारीगरों के साक्षात्कार द्वारा संकलित है। साथ ही द्वितीयक आकड़ों का संकलन पत्र–पत्रिका, समाचार पत्र, सरकारी अभिलेख, इन्टरनेट, आदि से किया गया है।

प्रस्तावना

भारत प्राचीन काल से ही हस्तनिर्मित तथा कलात्मक वस्तुओं का विश्व में प्रमुख केन्द्र रहा है। भारतीय हस्तशिल्प का इतिहास बहुत प्राचीन व अदभुद है। मोहन जोदारों, हड़प्पा, काली–बंगा, अजन्ता, ऐलोरा आदि से प्राप्त अवशेष भारतीय हस्तशिल्प के उत्कृष्ट उदाहरण है। "हस्तशिल्प से आशय उन कलात्मक एवं सृजनात्मक आकृतियों के निर्माण से है जिन्हे कारीगर अपने आस–पास उपलब्ध वस्तुओं द्वारा कम लागत में बनाते है। ये हस्त निर्मित वस्तुएं सामान्यतः दैनिक–घरेलु प्रयोग के साथ–साथ सजावटी, टिकाऊ व कारीगरी का अनूठा मिश्रण होती है।"

सुप्रीम कोर्ट ने 12 मार्च 1995 में एक फैसले में हस्तशिल्प को परिभाषित करते हुए कहा कि "इसका प्रमुख रूप से हाथ से बना होना जरूरी है यह मायने नही रखता कि इस प्रक्रिया में कुछ मशीनरी का भी इस्तेमाल किया जाता है।"

भारतीय हस्त कलाएं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांत्रित होकर वर्तमान समय में भी अपना वर्चस्व बनाए हुए है।

आज भारत विश्व में सबसे बडे हस्तशिल्प निर्यातक देशों में एक है। मार्च 2022 में भारत का कुल हस्तशिल्प निर्यात (हस्तनिर्मित कालीनों को छोडकर) 174.26 मिलियन अमेरिकी डालर था। भारतीय हस्तशिल्प रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही भारतीय हस्तशिल्प उधोग में महिला–पुरूष कार्य सहभागिता दर भी अधिक है। आधिकारिक आकड़ों के अनुसार यह वर्तमान में 68.86 लाख कारीगरों को रोजगार प्रदान करता है जिसमें 30.25 लाख पुरूष तथा 38.61 लाख महिला कारीगर कार्यरत है।

जबकि अनाधिकारिक स्रोत के अनुसार इनकी सख्या लगभग 2 करोड़ है।

सन् 1952 में भारत सरकार ने हस्तशिल्प के विकास और संवर्धन के लिए अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड की स्थापना की। जिसके प्रमुख उददेश्य निम्न है– 1. हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देना 2. अनुसंधान एवं परिकल्पना (डिजाइन) का विकास करना 3. तकनीकी विकास 4. विपणन।

भारतीय हस्तशिल्प विकास बोर्ड एवं वस्त्र मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष 8 दिसंबर से 14 दिसंबर को अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह के रूप में मनाया जाता है जिसमें हस्तशिल्प उधोगों के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, गोष्ठियों का आयोजन तथा पुरस्कार आदि दिये जाते है।

अध्ययन क्षेत्र

हमारे लघु शोध का अध्ययन क्षेत्र गढ़मुक्तेश्वर है, जो भारत में उत्तर प्रदेश राज्य के हापुड़

जनपद में आता है। हमारा यह लघु शोध पत्र (वर्ष 2023 में) गढ़ मुक्तेश्वर के 20 मूढ़ा कारीगरो के परिवार के साक्षात्कार पर आधारित है।

गढ़ गंगा का मूढ़ा उधोग

गंगा नदी के किनारे बसा गढ़मुक्तेश्वर, तीर्थ नगरी के रूप में भी जाना जाता है। यहां प्रतिवर्ष देश–विदेश से लाखों श्रद्धालू गंगा स्नान के लिए आते है ओर यहां के हस्त निर्मित आकर्षक मूढ़ों को खरीदने के लिए विवश हो जाते है। नदी के किनारे बिहड़ खादर क्षेत्र में सरकंड़ा (सेटा) प्राकृतिक रूप से स्वयं उग जाता है। जिसे स्थानीय श्रमिक काटकर, मूढ़ा कारीगरों को गड्डियों के भाव से बेचते है। मूढ़ा कारीगर सरकंड़ों को सुखाकर, कांटीदार पत्तियों को साफ करके, सुतली व साईकिल के टायर को प्रयोग में लाकर अपने–अपने घरों से ही मूढ़ा निर्माण का कार्य पूरे परिवार (महिला तथा बच्चे) के साथ करते है।

खादर क्षैत्रों में सेंटा लगभग पूरे वर्ष प्राप्त किया जा सकता है। अतः मूढ़ा व्यवसाय लगभग पूरे वर्ष बना रहता है।

मूढ़े का अर्थ एवं विशेषताएं

मूढ़ा प्राकृतिक वस्तुओं से निर्मित हस्त कला का आकर्षक नमूना है। जिसका निर्माण झुण्ड के सेटों और सन से बनी रस्सीयों द्वारा होता है तथा मूढ़ों को अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए इसके नीचले सिरे पर साईकिल का टायर प्रयोग किया जाता है।

मूढ़ा बनाने में कम लागत (बिजली, मशीनरी आवश्यक नही) व अधिक श्रम आता है और प्राकृतिक चीजों से बने ये मूढ़े पर्यावरण हितेशी होने के साथ–साथ सालों–साल तक प्रयोग योग्य बने रहते है।

मूढ़ों के प्रकार

गढ़मुक्तेश्वर के मूढ़ा कारीगर वैसे तो अनेक प्रकार व डिजाइन के मूढ़े तैयार करते है। लेकिन मूढ़ों के कुछ मुख्य स्वरूप अत्यधिक प्रचलन में आये है।

जैसे– कुर्सीनुमा मूढ़ा, सोफा–सेट मूढ़ा, मेज मूढ़ा, सजावटीनुमा मूढ़ा, छोटी–छोटी मूढ़िया तथा बच्चों के लिए आकर्षक व खिलौने आदि।

परिकल्पना

मूढ़ा उधोग में कार्यरत कारीगरों की आर्थिक स्थिति सामान्यतः निम्न होती है।

हमने अपने शोध पत्र की उपरोक्त परिकल्पना का अवलोकन करने के लिए प्रयुक्त अनुसूची में मूढ़ा कारीगरों की आय, बचत, जीवन की मूलभूत सुविधाओं तथा उनके बच्चों की शिक्षा आदि से सम्बन्धित प्रश्नों को शामिल किया है।

अधिकांश मूढ़ा कारीगर मूढ़ा निर्माण कार्य अपने घर से ही करते है इसलिए मूढ़ा निर्माण में कारीगरों के परिवार के अधिकांश सदस्य (बुजुर्ग, महिलाएं, तथा बच्च) सहयोग करते है। इसलिए मूढ़ा में महिला–पुरूष कार्य सहभागिता दर अधिक होती है।

मूढ़ा उधोग के कारीगरों की न्यूनतम पारिश्रमिक के स्थान पर मूढ़े के आकार, बुनाई,

डिजाहन आदि के आधार पर प्रति नग (मूढ़ा) पारिश्रमिक मिलता हैं इसलिए कारीगरों की आय के आकार में भी भिन्नता पायी जाती है।

मूढ़ा व्यवसाय में संलग्न कुल 20 मूढ़ा कारीगरों के परिवारों की आय तथा बचत स्थिति संबंधित तालिका

नोटः– प्रत्येक परिवार में सामान्यतः सदस्यों की संख्या औसतन 4 मानी गयी है।

तालिका 1

मासिक आय रू० में	परिवारों की संख्या	समग्र प्रतिशत	बचत
8000–10000	8	40%	0
10000–12000	6	30%	2
12000–14000	3	15%	3
14000–16000	2	10%	2
16000–18000	1	5%	1
18000–20000	–	–	–
कुल योग	20	100	08 (40%)

प्रदत्त डाटा अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार द्वारा लिया गया है। जिसके अन्तर्गत मूढ़ा कारीगरों के परिवार की मासिक आय तथा बचत को प्रतिशत में दर्शाया गया है।

तालिका 1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिकांश मूढ़ा कारीगरों के परिवार की मासिक आय निम्न है जिसके कारण मात्र 40 प्रतिशत परिवार ही बचत कर पाते हैं उनके साक्षात्कार से ज्ञात हुआ है कि आकस्मिक खर्चो जैसे विवाह, बिमारी, दुर्धटना आदि के लिए उन्हे महाजनों और साहूकारों से ऊँची ब्याज दर पर ऋण लेना पडता है। जो अंततः उन्हे ऋण जाल में जकड़ लेता है।

मूढ़ा व्यवसाय में संलग्न कुल 20 मूढ़ा कारीगरों के परिवारों की आर्थिक सुविधाओं से संबंधित तालिका 2

क्रम सं०	प्रश्न	कारीगरों की संख्या (हाँ)	हाँ (प्रतिशत)	कारीगरों की संख्या (नहीं)	नही (प्रतिशत)
1	मकान (स्वयं)	16	80%	---	0%
	किराएं का	4	20%	---	0%
2	मकान का स्वरूप कच्चा	6	30%	---	0%
	पक्का मकान	14	70%	---	---
3	वाहन	14	70%	6	30%
	साईकिल	12	60%	---	---
	मोटर साईकिल	2	10%	---	---
4	गैस चुल्हा	18	90%	2	10%
5	मोबाईल	19	95%	1	5%
6	टी०वी०	18	90%	2	2%

7	फ्रिज	5	25%	15	75%
8	वशिंग मशीन	---	---	20	100%
9	इन्वेटर	2	10%	*18*	90%
10	वाटर प्यूरीफायर	---	---	*20*	100%

प्रदत्त डाटा अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार द्वारा लिया गया है। जिसके अन्तर्गत मूढ़ा कारीगरों के परिवार का आवासीय स्वरूप व आर्थिक सुविधाओं को दर्शाया गया है।

तालिका 2 के अध्ययन से स्पष्ट है कि मूढा कारीगर बुनियादी सुविधाओं के लिए आज भी प्रयासरत है। साक्षात्कार द्वारा यह जानकारी प्राप्त हुई है कि अधिकांश कारीगरों ने प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभ प्राप्त कर अपने मकानों को पक्का कराया है तथा गैस–चुल्हा भी उज्जवला योजना के अन्तर्गत प्राप्त किया है।

मूढ़ा कारीगरों के 20 परिवारों में बच्चों के स्कूल स्थिति संबंधित सारणी

तालिका 3

शिक्षण संस्थान स्थिति	कारीगरों के परिवार की संख्या	प्रतिशत
सरकारी स्कूल	12	60%
निजी स्कूल	6	30%
स्कूल नही जाते	2	10%
कुल योग	20	100%

प्रदत्त डाटा अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार द्वारा लिया गया है। जिसके अन्तर्गत मूढ़ा कारीगरों के बच्चों के स्कूल स्थिति संबंधित आकड़ों को दर्शाया गया है।

आय का निम्न स्तर होने के बावजूद भी मूढ़ा कारीगर अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जाग्रत हुए है। तालिका 3 से स्पष्ट है कि 90 प्रतिशत मूढ़ा कारीगरों के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे है। साथ ही साक्षात्कार द्वारा ज्ञात हुआ है कि कारीगरों के बच्चे शिक्षा के साथ–साथ मूढ़ा निर्माण कार्य में भी सहयोग करते है।

हस्तशिल्प उधोग के उत्थान हेतू केन्द्र व उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाई गयी प्रमुख योजनाएं–

- राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (एन०एच०डी०पी०)
- व्यापक हस्तशिल्प क्लास्टर विकास योजना (सी०एच०सी०डी०एस०)
- हस्तशिल्प विपणन प्रोत्साहन योजना
- हस्तशिल्प कौशल विकास प्रशिक्षण योजना
- एक जनपद एक उत्पाद योजना (ओ०डी०ओ०पी०)
- मुख्यमंत्री हस्तशिल्प पेंशन योजना
- अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना (ए०एच०वी०वाई०)

मूढ़ा उधोग में संलग्न कारीगरों की समस्याएं

- आर्थिक स्थिति का पिछडा होना ही मूढ़ा कारीगरों की मूल समस्या है। कम आय से कम बचत, ओर कम बचत से कम निवेश द्वारा गरीबी दुष्चक्र संचालित रहता है तथा जीवन स्तर निम्न बना रहता है।
- मूढ़ा बाजार का संकुचित व निम्न स्तरीय होना, जिसके कारण मूढ़ों का उचित मूल्य प्राप्त नही होता।
- सरकारी सुविधाओं का अभाव व प्रशासन की अनदेखी के चलते मूढ़ा व्यवसाय में विकास की दर निम्न है।
- श्रम संघ का अभाव मालिक पक्ष के शोषण को जन्म देता है व श्रमिक पक्ष के हितों व अधिकारों की बात नही करता।
- क्रय–विक्रय संबंधी समस्या स्थाई व सुरक्षित स्थान के अभाव में मूढ़ा कारीगरों के समक्ष होती है। जिसके चलते मूढ़ा बाजार प्रभावित होता है।
- भू–माफियाओं व बढ़ते शहरीकरण आदि के कारण कच्चा माल जैसे सेंटा आदि का उत्पादन कठिन होता जा रहा है।
- प्लास्टिक से बने उत्पादों के बढ़ते प्रयोग ने भी मूढ़ा उधोग की बिक्री को प्रभावित किया है।

मूढ़ा उधोग से संबंधित समस्याओं को दूर करने हेतु सुझाव

- सरकार व प्रशासन द्वारा उचित आर्थिक सहायता व सुरक्षा देना अति आवश्यक है। जिससे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ मूढ़ा कारीगर मूढ़ा निर्माण कार्य करते रहे।
- विपणन समस्या मूढ़ा उधोग के विकास में बाधा है जिसके कारण मूढ़ा कारीगर मूढ़ों का सही मूल्य प्राप्त नही कर पाते है। अतः विपणन समस्या का निवारण प्राथमिकता में होना चाहिए।
- मध्यस्थों को दूर करना तथा मूढ़ा कारीगरों का सीधे उपभोक्ताओं को मूढ़ा बेचना, जिससे उचित लाभांश प्राप्त किया जा सके।
- कच्चा माल उपलब्ध कराने में शासन–प्रशासन का सहयोग आवश्यक है। जैसे भू–माफियाओं पर अंकुश लगाना, ठेकेदारों की मनमानी रोकना, बिहड़ों व जंगलों में आग लगने से बचाना आदि
- चिकित्सा संबंधी सुविधाओं के साथ–साथ सुरक्षा संबंधी नियमों का होना।

निष्कर्षः

इस लधु शोध "मूढ़ा उधोग में कार्यरत कारीगरों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन" का गहन विश्लेषण करने के पश्चात हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि मूढा कारीगरों की हस्त कुशलता और दक्षता के बावजूद भी उन्हे इसका उचित पारितोषिक प्राप्त नहीं होता है जिसके कारण वह इस व्यवसाय से पलायन करने को विवश हो रहे हैं।

यद्यपि केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा हस्तशिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए समय–समय पर विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है। किंतु अशिक्षा, जागरूकता का अभाव, असंगठन का प्रभाव, भ्रष्टाचार आदि के कारण केवल पाँच प्रतिशत कारीगर ही इन योजनाओं का लाभ ले पाते हैं।

हस्तशिल्प उधोग भारतीय संस्कृति और विरासत के संरक्षक है अतः सरकार व प्रशासन को इनके विकास के लिए, पूंजी की आसान शर्तों पर उपलब्धता, तकनीकी शिक्षा का विकास, ई कॉमर्स पोर्टल से जोडकर, सशक्त श्रम संगठन का गठन, हस्तशिल्प प्रदर्शनी और मेलों का आयोजन आदि जैसे दृढ़ कदम उठाने होगें जिससे भारत की युवा पीढ़ी भी हस्तशिल्प उधोग के उन्नति और उत्थान में भागीदार बन सके।

सन्दर्भ

1. https://www.jagran.com/uttar-pradesh/hapur-city-12182102.html.
2. https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/hapur/story-there-is-a-demand-for-small-scale-industrial-moth-mat-of-the-pilgrim-town-of-garhmukteshw.
3. https://www.livehindustan.com/news/article1-story-412681.html.
4. https://dainikbhaskarup.com/the-muddy-industry-of-the-citadel-ready-to-disappear-due-to-the-neglect-of-the-state-government/.
5. www.Indiafilings.com.
6. https;//www.ibef.org/exports/handicrafts-industry-india.
7. News papser.